B.A III Paper-VII

प्राकृत सट्टक साहित्य

इकाई -(3) रंभामंजरी

Q1 सट्टक मे रंभामंजरी कवि का परिचय एवं रंभामंजरी का संक्षिप्त विवेचन करे ?

Ans सट्टक के रंभामंजरी कवि का परिचय → इस सट्टक का रचयिता नयचन्द्र नामक जैन मुनि है। इनके गुरु का नाम प्रसन्नचन्द्र था। कवि ब्राह्मण है, यह पहले विष्णु का उपासक था और पीछे जैनधर्म मे दीक्षित हो गया। कवि को छः भाषाओं मे काव्य रचने का सामर्थ्य है और राजाओं का मनोरंजन करने मे भी वह पूर्ण कुशल है। नयचन्द्र ने इस सट्टक मे अपने आपको श्रीहर्ष और अमरचन्द्र कवि के समान प्रतिभाशाली बताया है। इस कवि ने गम्भीर महाकाव्य की भी रचना की है। स्तोत्रादि अन्य ग्रन्थ भी पाये जाते है। कवि समय - चौदहवी शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना जाता है।

रंभामंजरी - इसमें वाराणसी के राजा जैत्रचन्द्र और लाटनरेश देवराज की पौत्री रम्भा के प्रणय-व्यापार का वर्णन है। यह राजा वाराणसी का रहनेवाला था। इस जैत्रचन्द्र राजा की सात स्त्रियाँ थी और आठवी रम्भा सुन्दरी से वह विवाह करना चाहता है। राजा की प्रधान महिषी वसन्तसेना है और इसकी सखी कर्पूरिका है। राजा मदनज्वर से पीड़ित होकर लाटदेश के राजा देवराज की पुत्री रम्भा का समाचार लाने के लिए नारायणदास को भेजता है। नारायणदास देवी रम्भा को साथ लेकर लौट आता है। राजा जैत्रचन्द्र के जन्म दिवस के अवसर पर सभी लोग उसकी प्रशंसा करते है।

बतलाया जाता है कि किर्मीर वंश में उत्पन्न हुए मदनवर्मा राजा की पुत्री और देवराज की पौत्री है। राजा के लिए दिये गये जाने पर भी गामा शिव के द्वारा अपहृत कर लायी गयी है। राजा का रम्भा के साथ विवाह ~~सम्पन्न~~ हो सम्पन्न हो जाता है।

सन्ध्या और चन्द्रवर्णन के अनन्तर प्रतिहारी सहित राजा वाटिका में भ्रमण करते हुए रम्भा का स्मरण करता है। राजा रम्भा के वियोग के कारण अत्यधिक स्मरज्वर से पीड़ित है। इसी समय रोहक और कर्पूरिका का प्रवेश होता है। राजा कर्पूरिका से रम्भा का समाचार पूछता है। वह रम्भा का संदेश देती हुई कहती है कि उनका कहना है कि एक स्थान पर रहते हुए भी किस पाप के उदय से स्वामी का मुख भी देखने में असमर्थ है। यदि इतना प्रगाढ़ प्रेम है तो उसने प्रेमपत्र क्यों नहीं लिखा। कर्पूरिका उत्तर देती है- उन्होंने प्रेमपत्र-लिखना आरम्भ किया था पर मूर्च्छित हो जाने के चलते नहीं लिख पाया। राजा रम्भा से मिलने के लिए अत्यन्त व्याकुल हो जाता है। रोहक राजा की ओर देखकर कर्पूरिका से कहता है- तुम अशोक वृक्ष की शाखा का अवलम्बन ~~लेकर~~ लेकर खिड़की के द्वार से प्रविष्ट हो चन्द्रमा की चाँदनी के समान उसे नीचे उतार कर ले आओ, वह रम्भा को नीचे ले आती है और राजा नवकिसलय की शय्या पर रम्भा को सुला देता है।

~~उसके~~ अनन्तर रम्भा राजा के पास आ जाती है ~~और~~ और दोनों सुरत क्रीड़ा आरम्भ करने लगता है। यह प्रेम रस का यह ~~सह~~